P. 47.
SEM - II
Paper - 9

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

Date

पूर्व से आगे

निरीह किंतु दृढ़ निश्चयी पात्र लंगड़ ने लगभग सात वर्ष पहले दीवानी का एक मुकदमा दायर किया था। मुकदमे के लिए एक पुराने फैसले की नकल चाहिए थी जिसके लिए तहसील में आवेदन दिया था। नकल बाबू को कुछ रुपये रिश्वत न देकर वह धर्म की लड़ाई में जीवनभर जूझता रहता है। लंगड़ वस्तुत: कचहरी के दरवाजे पर टँगा हुआ एक भयानक पोस्टर बन जाता है।

स्वातंत्र्योत्तर न्याय व्यवस्था के यथार्थ को उद्घाटित करनेवाला दूसरा उदाहरण है न्याय - पंचायत भीखम खेड़ा। यहाँ अपने बेटे छोटे पहलवान द्वारा पीटे जाने पर कुशहर प्रसाद ने मुकदमा किया है। दो पेशियों में पंचों की अनुपस्थिति के कारण मुकदमें पर कोई कार्रवाई नहीं हो पायी। तीसरी पेशी पर जो कारवाई हुई उसमें पंच सरपंच की नासमझी और छोटे पहलवान की जिरह का स्तर पंचायत अदालतों की हास्यास्पद स्थिति को प्रस्तुत करता है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय न्याय व्यवस्था का तीसरा उदाहरण है जयादीन बनाम जोगनाथ का मुकदमा। जिसकी सुनवायी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट द्वारा की जा रही है। थानेदार की फर्जी कारवाई, मुकदमें के झूठे गवाह, पुलिस के झूठे मुखबिर के सामने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट असहाय सिद्ध होते हैं। वास्तव में वर्तमान न्याय व्यवस्था केवल पैसा कमाने का साधन मात्र है, समाजिक सुधार का नहीं।

भूदान आंदोलन, जमींदारी उन्मूलन, विकासखण्डों, सहकारी समितियों, ग्राम पंचायतों की व्यवस्था आदि के बावजूद गाँव की बदहाली बढ़ती जा रही है। शिवपालगंज की चमरही (चमारों की बस्ती) और आमलोगों की गरीबी को

देखते हुए जमींदारी उन्मूलन की बात हास्यास्पद प्रतीत होती है। शिवपालगंज गांव छोटे पहलवान, जोगनाथ, रामाधीन, शत्रुघ्न सिंह, रिपुदमन सिंह, डा० बलराम सिंह जैसे डाकुओं की क्रीड़ास्थली बन गया है। सबसे बड़े डाकू स्वयं वैद्य जी हैं। लंगड़ गाँव का सबसे निठल्ला वैद्य जी का पालतू कुत्ता है जिसे ठेलठाल कर ग्राम प्रधान की कुर्सी पर बैठा दिया जाता है। उसकी परचून की दुकान खुल जाती है, जिस पर सभी चीजों के साथ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से उड़ाई गई दवाएँ और प्राइमरी स्कूल पर बच्चों के लिए वितरित होनेवाले अमेरिकी दूध पाउडर की भी बिक्री होती है। यहाँ उपन्यासकार ने ग्रामसभा के चुनावों की हास्यास्पदता को उजागर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित तीन पद्धतियों का उल्लेख अत्यंत मनोरंजक ढंग से किया है। [एक रामनगर वाली दूसरी नेवादा वाली और तीसरी अहिंसापुरवाली]

स्वाधीनता के बाद भारतीय गाँवों के विकास के लिए विभिन्न सहकारी समितियों (Cooperative Societies) के संचालन का कार्य बी०डी०ओ०, एडी०ओ०, बहुत सारे इंसपेक्टरों, ग्रामसेवकों, पंचायत मंत्रियों जैसे कर्मचारियों को सौंपा गया। पंचवर्षीय योजनाओं के प्रावधान से इसके लिए समुचित वित्तीय अनुदान भी सरकार की ओर से दिये गये। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए विकास पर आधारित संस्थाओं में चुनाव की व्यवस्था भी की गयी। 'राग दरबारी' में इन तथ्यों को पूरी तरह ध्यान में रखा गया है। उपन्यास में चित्रित समाज के चित्रण से ऐसा लगता है कि इसमें शिवपालगंज के माध्यम से सारे गाँव समाज ही नहीं बल्कि समूचे स्वातंत्र्योत्तर समाज का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है।

Date

इस उपन्यास में अंतर्जातीय प्रेम की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। शहरों की तरह शिवपालगंज गाँव में भी यह समस्या वर्तमान है। वैद्य जी के दोनों पुत्र बद्री पहलवान और रुप्पन गाँव में ही रहनेवाले जयादीन की लड़की बेला की ओर आकर्षित है। बेला इस उपन्यास की एकलौती नारी पात्र है। वैद्य जी ब्राह्मण और जयादीन बनिया जाति से संबंधित है। बद्री पहलवान, रुप्पण और बेला में प्रेम पत्र का आदान - प्रदान होता है। बद्री पहलवान या रुप्पन द्वारा प्रेषित प्रेम पत्र का पता नहीं चलता है लेकिन बेला द्वारा वैद्य जी की छत पर फेंका गया प्रेम पत्र रंगनाथ के हाथों में एक दिन पड़ जाता है फलतः प्रेम का भेद खुल जाता है। बद्री पहलवान के बदले एक दिन रंगनाथ छत पर सोया रहता है और एक अज्ञात नवयुवती के स्पर्श प्राप्त कर रोमांचित होता है। बाद में पता चलता है कि वह नवयुवती बेला थी। एक दिन वैद्य जी अपने पुत्र बद्री पहलवान को जयादीन की बेटी बेला से नाजायज संबंध रखने के कारण बहुत डाँटते हैं। बाप और बेटा में निरर्थक बकवास होता है। चारित्रहीनता के कारण रुप्पण को भी डाँट पड़ती है। अपने बड़े भाई बद्री पहलवान से बेला के संबंध के बारे में जानकर रुप्पन भी उदास हो जाता है। एक दिन वैद्य जी जयादीन को समझाने और अपनी बेटी बेला का विवाह बद्री पहलवान से करने का आग्रह करने के लिए जयादीन के घर पर जाते हैं लेकिन जयादीन तैयार नहीं होते हैं।

'रागदरबारी' के मुख्य पात्र पर लिखा है 'राग दरबारी' का संबंध एक ऐसे नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिंदगी से है जो आजादी के बाद की दुर्गति और विकास

के नारों के बावजूद निष्ठित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यह उसी जिंदगी का दस्तावेज है। इससे स्पष्ट है कि रागदरबारी का विषय शिवपालगंज और उसकी छाती पर सवार वैद्य जी और उनकी बैठक है। इस दृष्टि से यह बैठक ही दरबार है जिसके राग से पूरा गाँव-समाज संचालित है। इसलिए शीर्षक की सार्थकता उपन्यास की प्रतीकात्मकता को उजागर करने में है। इस प्रकार शिवपालगंज की पंचायत, कॉलेज की प्रबंधन समिति और कोऑपरेटिव सोसाइटी के सूत्रधार वैद्य जी सहित वह राजनीतिक संस्कृति है जो प्रजातंत्र और लोकहित के नाम पर चारों ओर विकसित हो रही है।